(खण्ड–इ)

तालवाद्य : तबला / पखावज

अध्याय 13

अ. परिभाषाएं
ब. लय एवं लयकारी

अ. परिभाषाएं

जरब

जरब या जुब का अर्थ बोल ही होता है इसके अन्तर्गत किसी कायदा या बाँट में प्रयुक्त वर्णों पर अलग–अलग जोर देकर उसमें लयात्मक, वर्णात्मक, भेद उत्पन्न किया जाता है। एक ही बोल में बिना किसी परिवर्तन के केवल आघात (वजन) द्वारा उसे नया रंग देकर गुणी कलाकार लोग श्रोताओं को आनन्दित, चमत्कृत करते है। संक्षेप में ताल के सम के अलावा किसी भी बोल पर सम की तरह ही जोर देकर वादन किया जाता है तो अवनद्ध वाद्यों में यह क्रिया 'जरब' की क्रिया कहलाती है। उदाहरण स्वरूप यदि हम त्रिताल का वादन कर रहे हैं–

(1) धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धातिं तिं ता ता धीं धीं धा

इसमें हर विभाग की पहली मात्रा पर बल दिया गया है – फिर बाद में –

(2) धा धीं धीं धाधाधीं धीं धा धा तिं तिं ता ता धीं धीं धा

इसमें विभाग की दूसरी मात्रा पर बल देने के कारण इसका स्वरूप बदल गया।

जरब की क्रिया में सम के समान अधिक समय तक ठहराव नहीं किया जाता है। यह क्रिया क्षण भर के लिए कभी–कभी आवर्तन में वैचित्र्य पैदा करने के लिए की जाती है।

क्रिया

काल के गिनने के क्रम को क्रिया कहते है। ताल की आनन्दजनक शक्ति क्रिया में है दोनों हाथ के संयोग से शब्द पैदा करना, अँगुलियों को गिनना आदि क्रिया कहलाती है, संक्षेप में हाथ से ताल प्रदर्शन की रीति क्रिया कहलाती है। क्रिया प्रधानतः मार्गी तथा देशी दो प्रकार की होती है। इन दोनों के दो दो भाग– (1) निःशब्द (2) सशब्द और हो जाते है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

(क) मार्ग सशब्द क्रियाएँ :

(1) ध्रुवा – चुटकी बजाना

(2) सम्यक या शंपा–दाएँ हाथ पर बाएँ हाथ से आघात करना

(3) ताल – बाएँ हाथ पर दाएँ से आघात करना

(4) सन्निपात – दोनों हाथों से परस्पर आघात करना।

(ख) मार्ग निःशब्द क्रियाएँ

(1) आवाप – हाथ को उपर उठाकर अंगुलियों को बंद करना

(2) निष्क्राम – अंगुलियों को खोलना

(3) विक्षेप–दाहिनी ओर अंगुलियों को हिलाना।

(4) प्रवेश – हाथ को नीचे की ओर लाकर बाई ओर हिलाना।

(ग) देशी सशब्द क्रिया

(1) ध्रुव क्रिया कोई भी सशब्द क्रिया करना।

(घ) देशी निःशब्द क्रियाएँ

(1) सर्पिणी – हाथ को दाहिनी ओर ले जाना।

(2) कृष्य – हाथ को बाई ओर ले जाना।

(3) पद्मिनी– हाथ को उपर से नीचे की ओर ले जाना।

(4) विसर्जित – हाथ को बाहर की ओर ले जाना।

(5) विक्षिप्त – अँगुलियों को बंद करना।

(6) पताक – हाथ को ऊपर उठाना।

(7) पतित – जो हाथ ऊपर जा चुका है उसे नीचे लाना

पेशकार

"पेश" फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ उपस्थित, हाजिर या सम्मुख है। इसी से पेशकार या पेशकारा शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।

जब हम कोई ताल बजाना चाहते है तो उसी के ठेके के रूप के बोलों के अनुसार एक कठिन कायदे की रचना की जाती है, यह रचना बढ़ी हुई लय में नहीं बजाई जाती। इसकी चाल प्रायः डगमगाती हुये रखते है, इसीलिए मध्य लय में ही इस चाल को विशेष आनंद है इस कायदे के पलटे भी बनाए जाते है। इस प्रकार ठेके के विभागों का ध्यान रखते हुये जब यह प्रदर्शित किया जाता है कि हम अमुक ताल बजा रहे है और हाथ की सफाई, लयकारी, तैयारी दिखाना चाहते है तो इस क्रिया को 'पेशकार' कहते है, संक्षेप में जिस प्रकार गायक गीत से पूर्व राग का आलाप करते है उसी प्रकार तबला वादन में यह क्रम सर्वप्रथम आता है इसे बजाने के उपरांत ही कायदे, रेले, गतें, परने आदि बजाए जाते है। पेशकार में धीडकड, धिंता, त्रक, धिंता, आदि बोलों की बाहुल्यता है। दिल्ली घराने का प्रसिद्ध पेशकार जो तीनताल में निबद्ध है – उदाहरणार्थ

धाऽक्ड	धाऽतिर	किटधाऽ	तिऽधाऽ	तिरकिट	धाति	धाधा	तिन्ना
किटधाऽ	तिरकिट	धाऽतिर	किटधाऽ	तिधा	धाति	धाधा	तिन्ना
ताऽक्ड	ताऽतिर	किटताऽ	तिऽत्ता ऽ	तिरकिट	ताति	ताता	तिन्ना
किटधाऽ	तिरकिट	धाऽतिर	किटधाऽ	तिधा	धाति	धाधा	तिन्ना

रेला

रेला मूलतः कायदा की तरह का ही बोल होता है, लेकिन इसके वर्ण अपेक्षाकृत छोटे, अधिक कर्णप्रिय, मधुर और तेज लय में बजने वाले होते है। रेला की शुरूआत ही चौगुन लय से होती है और यह अठगुन या उससे भी तेज लय में बजता है। तिरकिट, धेनगिन, धेन आदि बोलों का इसमें मुख्य रूप से प्रयोग होता है इसमें चॉटी और लव के बोलो का अधिक प्रयोग होता है।

रेला शब्द जैसा नाम से ही विदित है वह समूह है जो रेल के समान दौडता हो। बीन, विचित्र वीणा, सरोद तथा सितार के झाले के साथ उसी तेज लय में रेला बजाने की प्रथा है। द्रुत लय में होने के कारण तबलियों की तैयारी मालूम पड़ती है। रेला मुख्यतः दो प्रकार का होता है – (1) स्वतंत्र रेला (2) कायदे से निर्मित रेला।

स्वतंत्र रेला :– जिस रेले की रचना का सम्बन्ध किसी कायदा आदि से न हो अर्थात् किसी रचना का आधार स्वतंत्र हो उसे स्वतंत्र रेला कहते है।

कायदे से निर्मित रेला :– किसी कायदे के पलटों में से कोई ऐसा पलटा चुन लिया जाता है जो द्रुत लय में सरलता से कायम

हो सके और इस तरह उसके वादन में धारा प्रवाहिता निरंतर बना सके उसे "कायदे से निर्मित रेला" कहते है।

बनारस घराने का एक रेला तीनताल में –

धातेटे धिड़नग दिनतक धातेटे धिड़नक दिनतक धातिर किटितक

तातेटे किड़नक तेनतक तातेटे धिड़नक दिनतक धातिर किटितक

मोहरा

मुखड़ा या मोहरा समानार्थी और एक ही उद्देश्य से जुड़े बोल होने के बावजूद आपस में कुछ भिन्नता रखते है। आशय दोनों का एक ही है सम या ठेके का मुँह दिखाना। जहाँ से बंदिश शुरू होती है – संगीत की भाषा में मुखड़ा कहते है। लेकिन तबला वादक के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान सम होता है। उस सम को स्पष्ट करने के लिए तबला वादक प्रायः दो तीन या चार मात्राओं के कुछ अनिश्चित बोलों का वादन करके सम पर कुछ इस प्रकार आते हैं कि वह स्थान शेष स्थानों से बिलकुल अलग प्रतीत होता है – इसे ही कोई मुखड़ा कहता है तो कोई मोहरा। मोहरा शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है – पहले अर्थ में छोटे–छोटे बोलों को मोहरा कहते है जिन्हें बजाकर गायक या वादक सम से आकर मिलता है जैसे तीन ताल में 13 वीं मात्रा से –

किड़नक तिरकिट तगताऽ तिरकिट। धा

दूसरे अर्थ में 'मोहरा' उन बोलों को कहते है जो तीहे का चक्कर लगाते हुये सम पर आते है, जैसे तीनताल में सम से सम तक का मोहरा निम्नलिखित है।

तागे तीना किडनग ताऽतिर। किड़नग तिरकिट तगताऽ तिरकिट

धा तिरकिटतगताऽ तिरकिट। धा तिरकिट तगताऽ तिरकिट

उठान

उठान परन का ही एक विशिष्ट प्रकार है जो नृत्य या तबला सोलो में सर्वप्रथम बजता है। पूरब घराने के तबला वादक अपने वादन का आरंभ उठान से ही करते है और इस उठान वादन से ही इसका अनुमान लग जाता है कि कलाकार में कितनी योग्यता, कितनी क्षमता है। उठान की सबसे बढ़ी विशेषता यह है कि यह निबद्ध अर्थात् बंधा हुआ नहीं होता और स्थान, कलाकार, संगीत विधा तथा परिवेश को देखते हुये अपनी रचनात्मक कल्पनाशीलता का परिचय देते हुये कलाकार उपज के आधार पर इसे बनाता और बजाता है।

उठान में कई प्रकार के लयों ओर लयकारियों का समावेश होता है। प्रायः विलम्बित लय से शुरू करके चौगुन, अठगुन तक इसका वादन किया जाता है। इसके बोल खुले और जोरदार होते है और अन्त में एक अच्छी और बड़ी तिहाई भी होती है।

उठान का एक छोटा रूप प्रस्तुत है–ताल त्रिताल

चक्करदार तिहाई

चक्रदार अथवा चक्करदार वस्तुतः तिहाई का ही एक बड़ा ओर विकसित रूप है। जब किसी तिहाई युक्त टुकड़ा, परन या गत की रचना को बिना किसी परिवर्तन किये तीन बार बजाकर सम पर आते है तो उसे चक्करदार टुकड़ा, परन या गत कहते है। चक्करदार बंदिश का ताल के प्रथम मात्रा से प्रारम्भ होने और सम पर ही समाप्त होना आवश्यक है जबकि तिहाई में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। इसका प्रयोग तबला, पखावज के अतिरिक्त कत्थक नृत्य में और कभी–कभी तंत्र वाद्यों में भी होता है। वर्तमान में चक्करदार के अनेक प्रकार प्रचार में है –

(1) साधारण (2) फरमाइशी (3) कमाली

चक्रदार का उदाहरण– ग्यारह मात्रा का एक टुकड़ा दिया जा रहा है। यह तीन बार बजने पर तीन ताल की दो आवृतियों की चक्रदार कहलायेगी।

धाधातिरकिट धिंतिरकिटतक धिरकिटतकत्तिरकिरतकधेऽत्त तिरकिटधिरकिट

तिरकिटधेऽत्ततक्कडान धातक कडानधा तक्कडान धा

ब. लयकारियाँ–आड़ कुआड़ बिआड़

लय–

गायन, वादन और नृत्य के निश्चित ओर नियमित गति को लय कहते है। लय अपने व्यापक अर्थों में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। लय के सही प्रयोगों के कारण ही अगर कोई ताल अपना आवर्त्तन निश्चित समय में पूरा करता है। पृथ्वी की अपनी धुरी पर एक निश्चित लय, सही घड़ी के सुई की चाल, स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी, ओर हृदय की घड़कन, ये सभी लय के जीवन्त उदाहरण है। लय शब्द जी धातु से बना है जिसका अर्थ है विलीन होना। संगीत के विभिन्न ग्रंथों में लय की विभिन्न परिभाषाएँ उपलब्ध है।

(1) शारंगदेव के अनुसार– क्रियानान्तर विश्रांतिलयः सत्रिविधो मतः।

अर्थात् क्रिया के अन्त में जो विश्रान्ति होती है उसको लय कहते है।

(2) भरत मुनि के अनुसार– क्रियाओं को कला रूप में कहकर कला और काल से स्थापित ति को लय कहा है।

(3) आचार्य वृहस्पति के अनुसार– किसी भी ताल के विभिन्न भागों को पृथक करने वाली क्रियाओं के मध्य में आने वाले विश्रांति काल 'लय' है।

लय के भेद : यूं तो लय के कई भेद है तीन भेद माने गये है – द्रुत, मध्य, विलम्बित यह तीनों लय प्रकार परस्पर संबध रखते हुये एक दूसरे पर आश्रित है। इन लयों का प्रयोग संगीत में विभिन्न रस एवं भावों के सृजन हेतु किया जाता रहा है, जैसे विलम्बित में करूण, विरह, मध्य लय में शान्त हास्य एवं श्रृंगार और द्रुत लय में रौद्र, वीभत्स, भयानक, वीर एवं अद्भुत।

लय के परस्पर सबंधों को इस प्रकार समझा जा सकता है द्रुत लय मध्य लय से और मध्य लय विलंबित लय से दुगुनी होती है

विलम्बित लय :– विलम्बित का अर्थ है धीरे चलने वाली, जिसे हम ठाह की लय भी कहते है। जब एक मात्रा से दूसरी मात्रा पर जाने से विलम्ब होता है अर्थात् लय की गति धीमी हो तो उसे विलम्बित लय कहते है। झूमरा, तिलवाड़ा, धमार, चौताल, आदि तालों का प्रयोग विलम्बित लय हेतु होता है।

मध्य लय :– मध्य का अर्थ है विलम्बित से तेज और द्रुत से धीमी अर्थात् बीच की लय। छोटा ख्याल, मसीतखानी गते और तबले में रेला आदि का वादन प्रायः इसी लय में होता है।

द्रुत लय :– तेज लय को द्रुत लय कहा गया है। वह लय जो सामान्य से दो गुनी और विलम्बित से चार गुनी तेज हो द्रुत लय कहलाती है। गायन में तराना, वादन में झाला एवं तबला स्वतन्त्र वादन में इस लय में गत, फदे, टुकड़े, परणों का वादन होता है।

लयकारी :–

लय के यूं तो अनेक प्रकार हो सकते है किन्तु विलम्बित, मध्य और द्रुत लय से हटकर लय के आडे तिरछे प्रयोग किये जाते है तो उसे लयकारी कहते है।

(1) ठाह लय – एक मात्रा में एक मात्रा को गाना बजाना ही ठाह लय कहलाता है।
(2) आधी गुन – 2 मात्राओं में बोली गई एक मात्रा को आधी गुन की लयकारी कहेगें।
(3) दुगुन – एक मात्रा में दो मात्राओं को बोलना।
(4) तिगुन – एक मात्रा में तीन मात्राएँ बोलना।
(5) चौगुन – एक मात्रा में चार मात्राएँ बोलना।
(6) पचगुन – एक मात्रा में पाँच मात्राएँ बोलना।
(7) छगुन – एक मात्रा में छः मात्राएँ बोलना।

आड़

आड़ का अर्थ होता हे टेढ़ा। इसे आडी लय भी कहते है। इसके अन्तर्गत डेढ़ ( ) की लयकारियों का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् जब एक मात्रा में डेढ़ मात्रा, 2 मात्रा में 3 मात्रा एवं 4 मात्रा में 6 मात्राओं का प्रयोग किया जाता है तो उसे आड़ की लयकारी कहते है। जैसे 6 मात्रा के दादरा ताल का समावेश 4 मात्राओं में हुआ है

धाऽधी ऽनाऽ धाऽती ऽनाऽ

कुआड़

कुआड़ की लयकारी में सवाई की लय का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार इसमें चार मात्राओं में 5 मात्राओं का समावेश होता है और एक मात्रा में एक चौथाई भाग का जैसे–

धाऽऽऽधी ऽऽऽनाऽ ऽऽधाऽऽऽतीऽऽऽनाऽऽऽ–

बिआड़

बिआड़ की लयकारी के विषय में भी 2 मत प्रचलित है प्रथम मत –जो अधिक प्रचलित है के अनुसार पौने दो गुन अर्थात् एक सही तीन बटे चार की लयकारी बिआड़ है इसके अन्तर्गत चार मात्राओं में सात मात्राओं का समावेश होता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

जरब :– सम के अलावा किसी भी बोल पर सम की तरह जोर देकर वादन करना।

क्रिया :– काल के गिनने का क्रम

पेशकार :– ठेके के रूप के बोलों के अनुसार एक कठिन कायदे की रचना।

रेला :– कायदे की तरह छोटे, कर्णप्रिय, मधुर व तेज लय में बजने वाले वर्ण।

मोहरा :– तबले पर दो तीन या चार मात्राओं के कुछ अनिश्चित बोलों का वादन कर सम पर आना।

उठान :– परन का एक विशिष्ट प्रकार

तिहाई :– जब कोई बोल तीन बार बजता है तो तिहाई कहलाता है।

लय :– संगीत में प्रत्येक क्रिया के बाद के समान विश्रान्ति को लय कहते है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(1) काल के गिनने के क्रम को कहते है

(अ) पेशकार (ब) क्रिया (स) लय (द) तिहाई

(2) मोहरा शब्द का समानार्थी

(अ) जरब (ब) रेला (स) मुखड़ा (द) कुआड़

(3) सम के अलावा अन्य बोल पर जोर देकर सम का वादन कहलाता है।

(अ) उठान (ब) परन (स) श्लोक (द) जरब

(4) आड़ एक प्रकार है।

(अ) वाद्य का (ब) नृत्य का (स) लय (द) तिहाई का

(5) एक मात्रा में तीन मात्राओं का बोलना कहलाता है।

(अ) दुगुन (ब) तिगुन (स) चौगुन (द) तिहाई

(6) सबसे धीमी लय कहलाती है।

(अ) मध्य लय (ब) द्रुत लय (स) आड (द) विलंबित लय

उत्तरमाला– 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 4 (स) 5 (ब) 6 (द)

लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. जरब की परिभाषा लिखते हुये वर्णन कीजिये।
2. रेला से आप क्या समझते है।
3. चक्करदार तिहाई को विस्तार से समझाईये।

विस्तृत प्रश्न

1. लय किसे कहते है एवं लय का जीवन में क्या स्थान है वर्णन कीजिये।
2. लय के विभिन्न प्रकारों का विस्तार से वर्णन कीजिये।

पद्म विभूषण से सम्मानित संगीतज्ञ

1971–अलाउद्दीन खान(सरोद)	2000–केलुचरण महापात्र (ओडिसी)
1971–उदय शंकर(नृत्य)	2000–जसराज (हिन्दुस्तानी गायन)
1975– एम एस सुब्बुलक्ष्मी (कर्नाटक गायन)	2001–अमजद अली खान (सरोद)
1977–बाल सरस्वती (भरतनाट्यम)	2001–जुबिन मेहता (ऑर्केस्ट्रा संगीत)
1980–बिस्मिल्लाह खान(शहनाई)	2001–शिवकुमार शर्मा (संतूर)
1981–रविशंकर (सितार)	2002–किशोरी अमोनकर (हिन्दुस्तानी गायन)
1986–बिरजू महाराज (कथक)	2002–गंगूबाई हंगल (हिन्दुस्तानी गायन)
1989–अली अकबर खान(सरोद)	2002–किशन महाराज (तबला)
1990–कुमार गंधर्व (हिन्दुस्तानी गायन)	2003–सोनल मानसिंह(शास्त्रीय नृत्य)
1990–सेमनगुडीश्रीनिवास(कर्नाटकगायन)	2005–रामनारायण (सारंगी)
1991– एम बालमुरलीकृष्ण (कर्नाटकगायन)	2008–आशा भोसले (फिल्म गीत)
1992–मल्लिकार्जुन मंसूर(हिन्दुस्तानी गायन)	2010–उमायलपुरम शिवरामन (मृदंगम)
1999–भीमसेन जोशी (हिन्दुस्तानी गायन)	2011–कपिला वात्स्यायन (संगीत शास्त्री)
1999–लता मंगेशकर (फिल्म गीत)	2012–भूपेन हजारिका (लोकगीत)
1999–डी.के. पट्टामल(कर्नाटकगायन)	2016–गिरिजा देवी (हिन्दुस्तानी गायन)
2000–हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)	2016– यामिनी कृष्णमूर्ति(भरतनाट्यम)